अंक : तृतीय

अभिव्यक्ति...

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर (छ.ग.)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

अभिव्यक्ति...

संरक्षक -

श्री बी.के. मोहन्ति

महानिदेशक लेखापरीक्षा

सलाहकार -

श्री अजहर जमाल

निदेशक

संपादक मंडल -

श्री रबिन्द्र गिरि / वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री मृत्युंजय पाठक / सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री दिपेश राज / सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती रूचि जायसवाल / कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	महानिदेशक का संदेश	-	03
2	निदेशक का संदेश	-	04
3	कोरोना, लॉकडाउन और परिवार का साथ	रूचि जायसवाल	05
4	कोरोना नहीं होता	निराली विनोद सयाम	06
5	बारिश	बासब चौधरी	07
6	कोरोना	आराध्या त्रिपाठी	08
7	कोरोना	मंजूषा त्रिपाठी	09
8	डायरी के पन्नों से (मेरी यात्रा)	कमलेश कुमार	10-12
9	लॉकडाउन, सोशल डिस्टेंसिंग और क्वारेंटीन	सुमन कुमार	13-14
10	कोरोना बीमारी	श्रीमती कंचन कुमारी	15
11	बदला परिवेश	दिपेश राज	16-17
12	''कोरोना'' एक महामारी	अजहर जमाल ''शाद''	18
13	''बरसात''	अजहर जमाल ''शाद''	19-20
14	जीवन की महत्वपूर्ण बातें	रीना महापात्रा	21
15	कोरोना हारेगा, हम जीतेंगे	रौनक महापात्रा	22
16	आधुनिक भारत की ''हिन्दी''	रूचिरा महापात्रा	23-24
17	ऐसा भी एक दिन	सुदीप्त मजूमदार	25
18	कोरोना का संदेश	हेमा चतुर्वेदी	26-27
19	कोरोना	रूग्वेद जोशी	28
20	कोरोना	श्रीमती रेनू भट्टाचार्य	29-30
21	रेहट	मृत्युंजय पाठक	31-33
22	प्रकृति, मानव और कोरोना	निशांत कुमार	34-36

(बी.के. मोहन्ति)
महानिदेशक लेखापरीक्षा

संदेश

हिन्दी आम आदमी की भाषा के रूप में देश की एकता का सूत्र है। हिंदी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है। हिंदी जन आंदोलनों की भी भाषा रही है।

पत्रिका के प्रकाशन से हमारे कार्यालय में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग को प्रोत्साहन मिलेगा। अत: पत्रिका का प्रकाशन प्रशंसनीय है और मैं इसके सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ ।

अजहर जमाल
निदेशक

संदेश

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवत: सबसे वैज्ञानिक भाषा है जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। हमारे कार्यालय की पत्रिका ''अभिव्यक्ति'' के प्रकाशन हेतु प्राप्त समस्त रचनाएं अत्यंत ही सराहनीय हैं और पत्रिका के प्रकाशन का हमारा प्रयास भविष्य में भी जारी रहेगा, मैं ऐसी शुभकामना करता हूँ ।

रूचि जायसवाल
कनिष्ठ अनुवादक

कोरोना, लॉकडाउन और परिवार का साथ

दूर अजनबी देश में सुन रहे थे कोरोना का नाम,
कहाँ पता था, स्वदेश में भी यूँ मचा देगा ये कोहराम ।
हम तो गए थे गृह जनपद, खुशी-खुशी मनाने होली का त्यौहार,
पर समाचार में सुन रहे थे प्रतिदिन, भारत में बढ़ते कोरोना की रफ्तार ।
इससे पहले कि हम लौट पाते, थम गए रेल के पहिए और बंद हो गई उड़ान,
हम बेबस, मजबूर, लाचार, कर सकते थे सिर्फ इंतजार ।
हाँ चिंता थी लगातार, कैसे पहुंचे, कब सम्भालें कार्यालय में कार्यभार ?
पर यकीन मानिए, कभी नहीं देखा था इतना खुशनुमा माहौल और इतना खुश परिवार ।
प्रतिदिन एक नया व्यंजन, प्रतिदिन एक नया स्वादिष्ट आहार,
वो हंसी, वो ठहाके, वो तरह-तरह के खेल और वो माँ का प्यार ।
किसी का काम बंद, किसी की नौकरी गई तो किसी का बंद रोजगार,
पर कोरोना ने जो रिश्तों में गर्माहट लायी, वो भी है ईश्वर का एक उपहार ।
किसी ने सपना खोया, किसी ने अपना खोया है,
किसी ने मानव जाति की रात-दिन की सेवा है ।
हे, ईश्वर ! अब और परीक्षा न लीजिए, अब कीजिए इतना उपकार,
सबका जीवन अब पुनः सामान्य, सरल कीजिए, सबके सपने दीजिए सँवार ।

निराली विनोद सयाम
पुत्री, विनोद मारोती सयाम
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

कोरोना नहीं होता

जैसे हर चमकती चीज का मतलब सोना नहीं होता ।
वैसे हर एक छींक का मतलब कोरोना नहीं होता ।
केवल पानी से हाथ धोना, हाथ धोना नहीं होता ।
20 सेकेंड साबुन से हाथ धोने पर कोरोना नहीं होता ।
ऐसे खतरनाक वायरस का इलाज जादू टोना नहीं होता ।
सावधानी, साफ सफाई रखने से कोरोना नहीं होता ।
जागरूकता, जानकारी रखने वालों को बाद में रोना नहीं होता ।
भीड़-भाड़ से दूर रहने पर कोरोना नहीं होता ।
घर से बाहर जाना लोगों से हाथ मिलना नहीं होता ।
क्योंकि ''नमस्कार'' करने वालों को कोरोना नहीं होता ।
महामारी के दौर में बस हमें धैर्य खोना नहीं होता ।
''सेनेटाइजर''-''मास्क'' के प्रयोग से कोरोना नहीं होता ।
समय रहते सचेत होंगे तो अपनों को खोना नहीं होता ।
रोगी स्वयं ''आइसोलेट'' हो जाए तो औरों को कोरोना नहीं होता।

बासब चौधरी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बारिश

रिमझिम रिमझिम बरसे बादल
बारिश में वो भीगा आंगन
हर तरफ मची हैं हलचल
पंख लगाकर उड़ता ये मन।

मिट्टी लाई खुशबू भीनी
महक उठी हर फूल की कली
बहती जाए पुरवाई सुहानी
मल्हार गाए मीठी बोली।

रंग बिरंगे फूल खिले हैं
खेत खलियान हरे भरे
हर तरफ फैली खुशियां हैं
लक्ष्मी आई घर के द्वारे।

आराध्या त्रिपाठी
सुपुत्री श्री अजय नारायण त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर

कोरोना

इस समय हमारे भारत में कोरोना फैल गया है और कोरोना हम लोगों तक ना पहुंचे इसलिए हम अपने नाक, आंख, मुंह नहीं छूते हैं और घर आने पर हैंडवाश करते हैं। हम लोग रोज काढ़ा पीते हैं। कोरोना से बचने के लिए हम लोग रोज योगा भी करते हैं। कोरोना के कारण हम लोग इस समय बाहर नहीं जा पाते हैं। कोरोना के कारण हम लोग स्कूल भी नहीं जा पाते हैं और ऑनलाइन पढ़ाई करते हैं।

ना हाथ मिलाना
ना बाहर जाना
घर पर ही पड़े है
बंद पैसा आना ।
रोते दिल की यही है दास्तां
कोरोना कोरोना कोरोना
इतना भी परेशान मत करो ना ।

मंजूषा त्रिपाठी
पत्नी श्री अजय नारायण त्रिपाठी
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर

कोरोना

भारत मां तेरी रक्षा को हमने कदम बढ़ाया है
इस कोरोना को हराने का हमने कदम बढ़ाया है ।
देश भर के डॉक्टर, नर्सों ने अपना हर फर्ज निभाया है
अपनी जान हथेली पर रख औरों की जान बचाया है ।
हमारे सारे सुरक्षाकर्मियों ने बड़ा सख्त लॉकडाउन मनवाया है
पहरेदार बन गया वह दिन-रात जाने कब से घर ना आया है ।
देश के बैंकर ने ही तो आर्थिक कमान संभाली है
कोशिश यही है वहां तक पहुंचे जिनका अकाउंट खाली है ।
नहीं हैं पीछे सफाई वाले भैया उसने भी जिम्मा उठाया है
लोग है अंदर और वह है बाहर स्वच्छता का संदेश फैलाया है ।
धन्य है हमारे प्रधानमंत्री जी जो जहान से बढ़कर जान को श्रेष्ठ बताया है
हमें अपनी खुद की सुरक्षा के लिए प्रधानमंत्री जी ने हाथ जोड़कर समझाया है ।

कमलेश कुमार
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी/निर्माण (निरी.)
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर

डायरी के पन्नों से

(मेरी यात्रा)

हमें अपनी जिंदगी के हर एक सफर में कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। उन्हीं में से मेरी एक यात्रा है जिसमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। मई 2010 में मुझे नियुक्ति पत्र प्राप्त हो चुका था, अतः मैं जल्द से जल्द अपने पद पर नियुक्त होना चाह रहा था। मैं अपने बड़े भैया के साथ घर (जमुई, बिहार) से सुबह ही बिलासपुर के लिए निकल चुका था। मेरा घर स्टेशन से 20 कि.मी. है अतः हमें पहले निकलना होता है जो कि हमारे लिए सामान्य बात है। सुबह 9.30 बजे ट्रेन (सुपर एक्सप्रेस) थी और हम दोनों सही समय पर स्टेशन पर थे। मैं टिकट लेने लाइन में लग गया, लाइन लंबी थी। मेरी बारी के समय ट्रेन आने की सूचना हो चुकी थी, लोग और ज्यादा परेशान होने लगे थे। मैंने टिकट लेकर पैसा दिया, लेकिन पैसा वापस करने के समय 10 रू. का चेंज नहीं होने के कारण मुझे बाद में आकर पैसा लेने को कहा गया। मैं बोला कि ''ठीक से देख लीजिए, आप जब कभी मुझे मिलें तो बिना मांगे लौटा दीजिएगा'', और मैं हँसकर चला गया। प्लेटफार्म पर पहुँचते ही ट्रेन भी दिखाई देने लगी थी। प्लेटफार्म पर बहुत भीड़ थी, हम दोनों ट्रेन पर चढ़ने की योजना बना चुके थे, जो कि यात्रा के दौरान आम बात होती है। ट्रेन में भी बहुत भीड़ थी। हम दोनों किसी तरह सामान्य बोगी में चढ़ चुके थे। हम दोनों को टाटा स्टेशन से पुनः दूसरी ट्रेन से बिलासपुर जाना था। लगभग 2-3 घंटे के बाद हमें किसी तरह से सीट मिली और हम बैठ चुके थे। 06.00 बजे शाम को हम टाटा स्टेशन पहुँच चुके थे, दूसरी ट्रेन आने वाली ही थी, हम दोनों स्टेशन पर इंतजार कर रहे थे। ट्रेन के सामान्य डिब्बे में बहुत भीड़ थी, अतः दोनों बैठ चुके थे, ट्रेन खुल चुकी थी, दोनों खाली सीट पर आकर बैठ गए। रात हो चुकी थी दोनों घर

से बना हुआ खाना खाकर सो गए, तभी रात में किसी ने हमें जगाकर कहा कि ''यह हमारा सीट है''। तभी उनमें से एक ने कहा कि ऊपर वाली सीट खाली है उस पर चले जाओ। सभी बारात वाले लोग लग रहे थे। तभी मेरे भैया बोले कि ''अपने बैग पर ध्यान रखना इसमें नियुक्ति से संबंधित सभी कागजात है''। मैं भी उसे सीट के नीचे ढकेल दिया। तभी रात में उन लोगों में से एक नें मेरे बैग को सबसे उपर वाले सीट पर रखने हेतु कहा, मैंने उपर रख दिया। फिर हमें एक सीट दे कर उस पर जाने को कहा, अब हम दोनों आराम से वहीं बैठकर रात निकाल दिए। सुबह हो चुकी थी, अब ट्रेन में लोगों का आवागमन ज्यादा होने लगा था। तभी सामने से टिकट चेक होने लगा, हमारी बारी आई तो हमनें अपनी कहानी सुनाई लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई, फिर हमने फाइन देकर बात मनवायी। अब ट्रेन बिलासपुर के नजदीक थी। हम दोनों बिलासपुर स्टेशन से होटल में जाकर रूके और ठीक समय पर कार्यालय में उपस्थित हुए, लेकिन कुछ कागजात नहीं रहने के कारण फिर से आने को कहा गया। अब फिर से सफर घर की ओर करना था। दोनों अगले ही पल बिलासपुर स्टेशन पहुँच चुके थे, शाम को ट्रेन थी, फिर वही बहुत भीड़ थी हम दोनों इस बार सामान्य बोगी में चढ़े, बिलासपुर से राउरकेला तक खड़े-खड़े ही सफर किए। अब तक दोनों काफी परेशान हो चुके थे। इसलिए राउरकेला स्टेशन पर ही उतर कर आराम करने की सोच चुके थे। अतः दोनों स्टेशन पर उतरकर सामने वाली सीट पर अपना बेडशीट बिछाकर आराम करने लगे और दूसरी ट्रेन से जाने का मन बना चुके थे। तभी सामने आर.पी.एफ. का स्टाफ आकर हमसे कुछ सवाल करने लगे, और कहने लगे कि यह ट्रेन अंतिम ट्रेन है और रातभर और कोई ट्रेन नहीं चलेगी। उस समय प्लेटफार्म पर भी इससे संबंधित सूचना दी जा रही थी। लेकिन हम इतना परेशान थे कि अब आगे सफर करने की हिम्मत नहीं थी। वहाँ पता चला कि कुछ समय पहले ही माओवादियों के द्वारा एक दुर्घटना करवायी गयी थी, अतः रात्रि के समय ट्रेन राउरकेला से आगे नहीं जाती है और यात्री को प्लेट फार्म पर भी रहने नहीं दिया जा रहा है। कुछ समय बाद वही आर.पी.एफ. का स्टाफ आकर हमें समझाने लगे और कहने लगे कि इस ''ट्रेन से ही चले जाओ'', हम भी बोल चुके थे कि ''अब चाहे जो हो हम आगे सफर नहीं करंगे।''। पूरी कहानी सुनने के बाद उन्होंने कहा कि यहीं बैठो और कहीं बाहर मत जाना।

शायद उनको फिर नहीं रहा गया, कुछ समय बाद आकर बोले कि ''अगर मैं सीट उपलब्ध करा दूँ, तो तुम चले जाओगे'' ? हम दोनों तैयार हो गए। अब ट्रेन छूटने वाली थी, उन्होंने हमें किसी तरह से सामान्य बोगी में सीट उपलब्ध करवाई और अब हम अपने सफर को प्रारंभ कर चुके थे। अब हमारे मन में बात आ रही थी कि कोई हमारी इतनी मदद क्यों करेगा ? कहीं सीट उपलब्ध करवाने के बदले में हमसे कुछ मांग रखी जाए, जो कि आम लोगों की सोच में सामान्य बात है। कभी-कभी मन में यह भी आ रहा था कि लगता है अभी नौकरी में नए हैं। हम दोनों सोचते रहे, इंतजार करते रहे और सफर समाप्त होने को था। अब रात का अंधियारा भी साफ हो चुका था और मेरे मन का भी। अब दिन के उजाले की तरह यह साफ हो चुका था कि वो आगे किसी जरूरतमंद की मदद करने में लग चुके थे।

धन्यवाद !

सुमन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लॉकडाउन, सोशल डिस्टेंसिंग और क्वारेंटीन

लॉकडाउन, सोशल डिस्टेंसिंग और क्वारेंटीन, ये तीन शब्द सन् 2020 की शुरूआत से पहले शायद ही किसी ने सुने होंगे, सन् 2020 में ये तीन शब्द जीवन के मूल मंत्र हो गए हैं। न केवल भारत में वरन् विश्व भर में डॉक्टरों व वैज्ञानिकों ने ये तीन मंत्र ही सुझाये हैं, ऐसा इसलिए कि दिसम्बर 2019 में जब कोरोना बीमारी की शुरूआत चीन से हुई तो इसका इलाज ढूंढ़ पाने में असमर्थ होने के कारण डॉक्टरों व वैज्ञानिकों ने इसके संक्रमण से बचने को प्राथमिकता दी। एक ऐसी वायरस जनित बीमारी जिसमें फ्लू के लक्षण, कोई दवा नहीं, संक्रमण की तीव्र दर को पास आने से बचाने का एकमेव उपाय संपर्क से बचना और संक्रमण की रफ्तार को तोड़ना ही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने जब इसे महामारी घोषित किया तो विश्व के बड़े-बड़े देश लॉकडाउन करने लगे। बाजार, कार्यालय, स्कूल-कॉलेज, कारखाने सब बंद हो गए। मार्च-अप्रैल आते-आते तो विश्व थम सा गया। ऐसा मंजर शायद ही कभी किसी ने देखा होगा। सड़के, रेल, हवाई जहाज सब बंद, मानो कोई युद्ध छिड़ गया है पर दुश्मन दिखता ही नही। नगर, शहर, गाँव सब सूने, ऐसा एक-दो दिन हो तो कोई और बात, महीनों तक लोग घरों में बंद, ना पड़ोसी से मिलना ना ही अपनों से, अपनी दैनिक जरूरत की चीजें जिसमें मूलतः खाने पीने का

ही सामान होता था लेने के लिए लॉकडाउन में थोड़ी छूट मिले तो दुकानों पर इस कदर भीड़ उमड़ पड़ती कि दूसरे मूल मंत्र - सोशल डिस्टेंसिंग का लोगों को ख्याल ही नहीं रहता और नतीजा संक्रमण की श्रृंखला तोड़ने की कोशिश विफल हो जाती। इस तरह पहले लॉकडाउन के समाप्ति के पूर्व ही दूसरे, फिर दूसरे से तीसरे लॉकडाउन.... करके लॉकडाउन की कई श्रृंखला चली जो आज भी जारी है। घनी आबादी वाले देश खासकर जो गरीब हैं

जैसे भारत, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश इत्यादि लॉकडाउन से उत्पन्न हुई बेरोजगारी से परेशान है। सोशल डिस्टेंसिंग ने मानों अपनों के बीच की दूरी को बढ़ा दिया है। कोरोना संक्रमित मरीज के साथ-साथ पूरे परिवार को डर के साये में जीना पड़ता है। रिश्तेदार, पड़ोसी सब छूट जाते हैं यहाँ तक कि मृत्यु हो जाने पर अपने ही साथ छोड़ देते हैं और अंत समय में जो काम आया वो स्वास्थ्य कर्मी या नगर निगम के लोग थे। संक्रमित के संपर्क में आये लोगों को 14 से 17 दिन घर से दूर क्वारेंटीन सेंटर में बिताना, मानो वनवास ही हो, बीमार नहीं होते हुए भी बीमार की भाँति रहना, पास होते हुए भी जहाँ कोई मिलने, हाल-चाल पूछने भी ना आए।

इस बीमारी ने होली, ईद, गुड फ्राईडे इत्यादि सब त्यौहारों का उत्साह ही खत्म कर दिया, मानव विश्व युद्ध के समय भी इतना नहीं डरा होगा जितना आज डरा हुआ है। जिसके सामने विकसित देशों के डॉक्टरों व वैज्ञानिकों ने भी घुटने टेक दिये। जब तक इस बीमारी की वैक्सीन या दवाई नहीं आ जाती तब तक के लिए ये तीन मंत्र लॉकडाउन, सोशल डिस्टेंसिंग और क्वारेंटीन ही जीवन रक्षक है। इनका अक्षरशः पालन करना होगा।

श्रीमती कंचन कुमारी
पत्नी दिपेश राज
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

कोरोना बीमारी

सन दो हजार बीस की सौगात आई
जो हमने अपने पड़ोसी चीन से पाई
कितनों ने रोजगार गंवाया
बच्चों का स्कूल छुड़वाया।
लाखों ने है जान गंवाई
कैसी यह कोरोना वायरस आई
बने वारियर डॉक्टर, नर्स और सिपाही
सेनेटाईजर, मास्क, सामाजिक दूरी
अब तक यही दवा कोरोना की पाई
आओ हम सब मिलकर करें खुद ही तैयारी
स्वच्छ, स्वस्थ रहें घर पर,
योग करें इम्यूनिटी बढ़ाएं
और भगाएं कोरोना बीमारी।

दिपेश राज
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

बदला परिवेश

बात बीते जून के महीने की है, दोपहर में खाना खाने के बाद बिस्तर पर लेटा तो मन में कई सारी बातें एक साथ कौंधने लगी। मन में एक अजीब सी हलचल हुई। और ये कौंध, ये हलचल हमारे बदले परिवेश को लेकर थी।

हम उस परिवेश में बड़े हुये हैं, जहाँ सुबह की चाय पर पिताजी के साथ आठ-दस सहकर्मी होते थे, क्योंकि हम सरकारी अस्पताल के सरकारी आवास में पले बढ़ें हैं। वहाँ पड़ोसी भी वही लोग थे जो पिताजी के साथ काम किया करते थे। दोपहर में माता जी और आस-पास की महिलाएं, जिनमें से किसी को हम चाची तो किसी को बुआ कहकर बुलाते थे, उनकी चौपाल लगती थी। और शाम को फिर पिताजी और आस-पास के लोग एक साथ बैठकर घंटो कुछ अपनी कहते, कुछ उनकी सुनते। इन सभी के बीच हम चार भाई-बहनों की परवरिश हुई। मैं उस परिवेश में बड़ा हुआ जहाँ किसी एक बच्चे के पास साइकिल होती थी और दसों बच्चे उसके पीछे दौड़ते थे। क्रिकेट खेलने के लिए दस बच्चे पैसे इकट्ठा करते और बैट-बाल खरीदते। अतिथियों का तो जैसे हमारे यहाँ ताँता लगा रहता था। सच मानो तो अतिथियों का आना हम बच्चों को बहुत भाता था क्योंकि उनके आने से हमें पढ़ाई में थोड़ी ढ़ील मिल जाती थी। साथ ही अगर उनके साथ बच्चे होते थे तो हमें और भी आनंद मिलता था क्योंकि हमें पूरे दिन के लिए साथ मिल जाता था। अचानक से पत्नी ने आवाज लगाई - शाम के चार बज गये, बाजार जाकर जल्दी से सब्जी फल वगैरह लाओ नहीं तो दुकाने बंद हो जायेंगी।

इतना सुनते ही मैं फिर इस बदलते हुए परिवेश से रू-ब-रू होने लगा। पिछले छह महीने से कोविड-19, कोरोना, सोशल डिस्टेंसिंग, सैनेटाइजर, मास्क क्वारंटीन, लॉकडाउन जैसे शब्दों के आसपास हम खुद को घिरे महसूस कर रहे हैं। ये कैसी समस्या मानव जीवन पर आ पड़ी है।

पहले बीमार का लोग ख्याल रखते थे। ज्यादा स्नेह, ज्यादा सेवा-सत्कार होता था लेकिन ये क्या, बदले परिवेश की बीमारी भी ऐसी कि लोगों को सामाजिक दूरी बनाकर रखना है। हाँ, यहाँ तक तो ठीक है कि ये बीमारी एक दूसरे के सम्पर्क में आने से फैलती है तो भौतिक दूरी होनी चाहिए, सामाजिक दूरी तो नहीं। सच कहा जाय तो ये सामाजिक दूरी जैसे शब्दों ने हर एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से दूर कर दिया है। ना हम किसी की खुशी (शादी, मुण्डन, छेदन) में शामिल हो सकते हैं और ना ही हम किसी के शोक में शामिल हो सकते हैं। दूसरी ओर लॉकडाउन के कारण लोगों में आर्थिक तंगी अलग है। अब जिसके पास पैसे भी हैं, वे भी अपने भविष्य के लिए सुरक्षित रखने को लेकर किसी की मदद को आगे नहीं आ रहे हैं। सच में यही तो वास्तविक सामाजिक दूरी है जिसकी हमें दरकार नहीं थी। ऐसी विकट परिस्थिति में हमें एकजुट होना था और मिलकर एक दूसरे का सहयोग करना था ताकि बीमार होने पर भौतिक दूरी बनाने में हमें कोई परेशानी न हो। चलिए एक कदम हम खुद आगे बढ़ते हैं और सामाजिक दूरी को मिटाकर सामाजिक समरसता बढ़ाने का प्रयास करते हैं। हम समझते हैं कि कोरोना काल का यह बूस्टर सिद्ध होगा।

अजहर जमाल ''शाद''
निदेशक
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर

''कोरोना'' एक महामारी

दुश्मन-ए-जान कोरोना को हरा देना है,
चार दिन और सावधानी बरत लेना है ।
अपने घर के सुन्दर दरीचों की,
अपना पूरा संसार कर लेना है ।
तरस अगर स्वयं पर नहीं आता,
अपने पूरे परिवार पर कर लेना है ।
यह कोई जेल नही घर है प्यारों,
जिससे जी चाहे फोन पर बात कर लेना है ।
हृदय मिला लेना है यह स्वीकार है,
दूर लेकिन यह हाथ कर लेना है ।
चिंता अपनी हर एक से पहले करनी है,
काम यह वाहयात है पर स्वयं पर आजमाना है ।
जिन्दगी बहुत खास है ना मिलेगी दुबारा,
ऐसे ही जतन से इसे बचाना है ।

अजहर जमाल ''शाद''
निदेशक
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर

''बरसात''

अलसाई सी सुबह !
मैं मुस्कुराहट के साथ जगता हूँ
मुझे प्रातः की गर्मी महसूस होती है !
जब दिन का आरम्भ हल्की बुंदा-बांदी के साथ होता है
अचानक ! आधी रात में यह गिरता है
लगातार गिरता रहता है।
यह रात के अंधेरे में विलीन हो जाता है ।
जंगल में पंछी बैठे हैं ! एकदम चुप ! शांत
पंख ऊपर और नीचे ले जाते हुए !
इनका घोंसला नष्ट हो चुका है !
यह क्या ? वह दुखी और निराश नहीं हैं,
वह आसमान में ऊँची और ऊँची उड़ान भरेंगे।
आने वाला कल ! इक नई उम्मीद के साथ आएगा
वह एक बार फिर !
खुली धूप का आनंद लेंगे।
वर्षा होगी और होती रहेगी !

हां ! रूकेगी नहीं, आप नहीं जान पाते
यह कब होगा ?
कभी-कभी यह बूंदा-बांदी !
कभी-कभी यह ओलों के साथ आता है
कभी-कभी केवल गरज, तूफान
कभी-कभी हमको इसकी आवाज से डर लगता है !
मुझे पता है यह होगा !
लेकिन कभी पता नहीं चलेगा !
यह कब होगा ?
मुझे पता है कि यह अनिश्चित है
डरावना और कट्टर !
पर मुझे यह बारिश पसन्द है
यह मुझे खुशी और उल्लास देता है !
अलसाई सी सुबह !
मैं मुस्कुराहट के साथ जगता हूँ।

जीवन की महत्वपूर्ण बातें

- अपने आप को कमजोर मत समझो।
- जीवन की यात्रा हमेशा आसान नहीं हो सकती है लेकिन हमें हर समय सकारात्मक रहना चाहिए।
- इंसान गलती का पुतला है लेकिन गलती करना कोई कमजोरी नहीं।
- गलती करने से मनुष्य को शिक्षा मिलती है।
- जीवन में लक्ष्य निर्धारित करना महत्वपूर्ण है और उन्हें हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।
- जीवन एक यात्रा है न कि मंजिल। इसका मतलब है कि हमें धीरे-धीरे और शांति से हर पल का आनंद लेने और इसके माध्यम से भागने के बजाय इसका अधिकतम लाभ उठाने की आवश्यकता है।
- ज्ञान को उन्नत करते रहना चाहिए अन्यथा वह जंग लगे उस हथियार की तरह होगा जो वक्त आने पर पूरी तरह से उपयोगी साबित नहीं होगा।
- कर्म करो फल की चिंता मत करो।
- लालसा का कोई अंत नहीं, पर लालसा, लोभ, लालच से दूर रहने में ही भलाई है।
- संसार की सारी ईश्वरीय शक्ति हममें परिपूर्ण है।
- हम ईश्वर नहीं, ईश्वर का दूत बन सकते हैं।
- प्रतिदिन सुबह उठने के बाद अपने जीवन का नया अध्याय लिखने का प्रयास करो।

रीना महापात्रा
पत्नी श्री प्रदीप महापात्रा
व.ले.प. अधिकारी

रौनक महापात्रा
सुपुत्र श्री पी.के. महापात्रा
व.ले.प. अधिकारी

कोरोना हारेगा, हम जीतेंगे

मिलकर कोरोना को हराना है।
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है।।

हाथ किसी से नहीं मिलाना है,
एक दूसरे से दूरी बनाकर चलना है।

मुँह, आँख, नाक में हाथ नहीं लगाना है,
साबुन से बार-बार अच्छे से हाथ धोना है।
सेनिटाइजर से भी चीजें साफ करना है।।

घर से जरूरत के बिना नहीं निकलना है,
बचाव ही इसका इलाज है।

कोरोना से हमको घबराना नहीं है,
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है।
मिलकर कोरोना को हराना है।।
कोरोना हारेगा, हम जीतेंगे।।

आधुनिक भारत की हिन्दी

''हिन्दी'' दुनिया की प्राचीन भाषाओं में से एक है। हिन्दी को भारतवर्ष में राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया है। हिन्दी भाषा दुनिया में सबसे अधिक बोलने वाली भाषाओं में से एक है। हिन्दी भारतवासियों के दिल की धड़कन है। देश की प्रगति के गर्व में राष्ट्रभाषा हिन्दी का विशेष महत्व है। हमारे इतिहास में भी हिन्दी को अपनी अलग पहचान मिली है, पर कहते हैं ना ''समय के साथ सब बदल जाता है'' ऐसे ही समय के साथ हिन्दी भाषा ने भी अपनी करवट बदली है और अंग्रेजी भाषा हिन्दी का स्थान लेती जा रही है। आज हर क्षेत्र में अंग्रेजी को हिन्दी से ऊपर रखा जाता है। कार्यो का माध्यम विदेशी भाषा अंग्रेजी बन गयी है। अंग्रेजी को आज के जमाने में हिन्दी से ज्यादा महत्व दिया जाता है।

यह सही है कि अंग्रेजी भाषा आज के आधुनिक जीवन के लिए जरूरी है पर अंग्रेजी बोलने का मतलब हिन्दी को भूलना नहीं है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्पष्ट कहा है -

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।''

इसमें यह कहा गया है - ''निज भाषा'' यानी अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है। बिना मातृभाषा के ज्ञान के पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। विश्व में सभी देशों की अपनी एक भाषा होती है, जो सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र से बांधने की क्षमता रखती है। हिन्दी पूर्णरूप से सक्षम है जो देश को एकजुट रख सके। अफसोस की बात यह है कि कुछ लोग आज यह भूल गए हैं और अंग्रेजी भाषा को हिन्दी भाषा के ऊपर रखते हैं। आज अंग्रेजी भाषा ने अपनी जड़े ज्यादा घेर ली हैं

जिससे भविष्य में हिन्दी भाषा के खो जाने की चिंताये बढ़ गयी हैं। जो लोग हिन्दी भाषा का ज्ञान रखते हैं उन्हें हिन्दी के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध कराने के लिए हर साल 14 सितम्बर को ''हिन्दी दिवस'' मनाया जाता है। इस दिन सब भारतीयों को एकजुट होकर हिन्दी के विकास को एक नए सिरे से शिखर तक ले जाने का संकल्प लेना चाहिए ताकि हम उसका महत्व लौटा सकें जो आज कहीं खो गया है।

अंत मे ंयही कहूँगी कि हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है, जिस पर हमें गर्व होना चाहिए। हिन्दी हमारे भारतीय संस्कृति की आत्मा है इसलिए हिन्दी के महत्व को समझें और दूसरों को भी समझाएं। तभी हिन्दी सचमुच में राष्ट्रभाषा बन पाएगी।

रूचिरा महापात्रा
सुपुत्री श्री प्रदीप कुमार महापात्रा
व.ले.प. अधिकारी

सुदीप्त मजूमदार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

ऐसा भी एक दिन

जबसे आया कोरोना, भूल गये सारी दुनियादारी

पहले तो घर में तालाबंदी, फिर आया मास्क, सांसो पर भी तालाबंदी

जो सड़क पहले पार होना था मुश्किल, अब वही हो गयी सुनसान/वीरान

पहले सभी चाहते थे नजदीकियाँ, अब मांगने लगे दूरियाँ

दोस्ती, यारी, शादी, पार्टी सब भूल के सभी हम घर में छुप गये

बच्चे सब स्कूल से दूर, ऑनलाइन क्लास में, मोबाइल लैपटाप में मशगूल

घर में होने लगी घर-घर की कहानी, एक रोटी के लिए बहुतेरे हो गये विवश

बहुतों ने की इन दिनों में लोगों की सेवा, इसलिए उम्मीद है एक दिन नया सूरज उगेगा

हम सब हंस खेल के बाहर निकलेंगे, बस इंतजार है उसी दिन का जो दूर नहीं है.....।

कोरोना का संदेश

साफ ऋतु साफ गगन, निर्मल संध्या नवीन विहान

इठलाती नदियां, हरियाती प्रकृति, चहचहाते विहंग, मुस्कुराता जहान

क्या कोरोना से केवल हुआ है नुकसान ?

रिश्तों में पुरानी सी कसावट, एक दूसरे के प्रति परवाह की आहट

आपसी संबंधों की चिंगारी जो दब गयी थी राख में, आ रही उसमें गर्माहट

क्या कोरोना की नहीं है ये सजावट ?

मानवीय मूल्य, नैतिकता, संस्कृति से दूरी की वजह से हो रहे थे नष्ट

संस्कारों की समिधा, भौतिकवाद की अग्नि में हो रहे थे भ्रष्ट

क्या कोरोना की वजह से पुनर्जीवित नहीं हुए स्पष्ट

प्रकृति तो करवट लेगी क्योंकि कालगति है वर्तुलाकार

क्या कोरोना नहीं है मानवजाति से प्रकृति का प्रतिकार

हाथ जोड़िये, शीश झुकाइये माफी अपने गुनाहों पे

छोड़ दीजिए जीवन को प्रकृति के अविरल हाथों पे

जीवन जियें भुलाकर मिथ्या अस्तित्व को, जिये अस्तित्वहीन

तभी गगन सुंदर, निर्मल धरा उपजाऊ होगी जमीन

यही पूरे मानवजाति के लिये संदेश है कोरोना का

तुम्हारे ना होने का भाव है एकमात्र रास्ता तुम्हारे होने का ।

हेमा चतुर्वेदी
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

रूग्वेद जोशी
द्वारा- श्रीमती रेनू भट्टाचार्य
पर्यवेक्षक

कोरोना (कोविड-19)

आज मैं अपने कमरे में बैठकर सोचता हूँ,
कौन होगा उन रास्तों पर जहाँ मैं घूमा करता था,
क्या वही चाय, वहाँ कोई चुस्कियाँ लेकर पीता होगा,
क्या कोई है, जो उन गलियों का ख्याल रखता होगा।

हम सब घरों में आज छुपकर बैठे हैं,
और हमारे शहरों पर डर ने अपना राज बना लिया है,
एक दिन आयेगा बहुत जल्द, जब हम डर को हरायेंगे,
और उन्हीं गलियों में बिन नकाब घूमने चले जायेंगे।

यह साल एक कहानी जैसा लगता है,
एक ऐसी दास्ताँ जो भूल जायें तो बेहतर लगे,
लेकिन कुछ घाव ऐसे दे गया है ये समय,
कि अपना होना ही जैसे इन्सान भूल गया है।

श्रीमती रेनू भट्टाचार्य, पर्यवेक्षक
केन्द्रीय एवं विशेष जाँच अनुभाग
बिलासपुर

कोरोना

मच गया कोहराम चारों ओर,
जब आयी खबर चारों ओर,
पूरा विश्व भयभीत होकर चिल्लाया,
कोरोना-आया, कोरोना-आया।

यह कैसी बीमारी है किसी की समझ में नहीं आया,
इन्सानों को इन्सानों से दूर कर,
यह कैसी मजबूरी लाया।

पर यदि रहना है इस दुनिया में तो,
भारत की संस्कृति को याद करना है,
बीस सेकेण्ड तक धोना हाथ और
दूर से नमस्ते करना है।

अब मनुष्य की समझ में आया कि,
भगवान ने सबक सिखाया है,
पर्यावरण से जो करे खिलवाड़,
उसका यह नतीजा सामने आया है।

अपने बच्चों को बचाने ईश्वर फिर धरती पर आया है,
मंदिर-मस्जिद-गुरूद्वारा छोड़कर
सफेद कपड़ों में बाहर आया है।

नमन् है सभी कोरोना वारियर्स को
जिन्होंने महाप्रलय से बचाया है।

मृत्युंजय पाठक
सहा. लेखा परीक्षा अधिकारी
द.पू.म. रेलवे, बिलासपुर

रेहट

(एक संस्मरण)

हमारे जीवन के वे अनमोल पल, जो हम अपने बचपन की मस्ती एवं बेफिक्री में गुजार चुके हैं, उसे हम अब कभी वापस नहीं जी सकते हैं। इन अनमोल पलों को अब स्मृतियों में ही जिया जा सकता है। वह भी यह तभी संभव हो पाता है, जब हमारी आँखों के सामने कोई भी दृश्य या चित्र आकर हमें उन दिनों की याद दिला जाता है और हम अपने आपको उन यादों के सागर में तैरने की खुली छूट दे पाते हैं।

ऐसे ही मुझे अचानक व्हाट्सएप पर किसी ने रेहट का चित्र भेजा और अनायास ही गाँव और बचपन के वे सारे पल स्मृति पटल पर चलने लगे, जैसे मानो अभी कुछ समय पहले की ही तो बात हे। उस समय रेहट एवं डीजल पंप का उपयोग सिंचाई के लिए पलामू-गढ़वा के प्रायः सभी गाँवों में होता था। रेहट सिंचाई के लिए सबसे सस्ता एवं सुगम साधन हुआ करता था। ना तो डीजल का खर्च न ही बिजली की चिंता। वैसे भी उस समय इस क्षेत्र के अधिकतर गाँवों में बिजली पहुँची भी नहीं थी। अन्य सभी बच्चों की तरह मेरा भी बचपन अपने गाँव एवं नाना-नानी के गाँव में बीता। जहाँ भी हमें रेहट चलते दिख जाता, हम लोग घंटो उसके सामने खड़े होकर बैलों को रेहट में जोत कर कुओं से पानी निकालने की प्रक्रिया को बड़ी तन्मयता से निहारा करते थे।

यही दिसंबर-जनवरी का महीना हुआ करता था, गाँव के छोटे-छोटे किसान अपने खेतों में गेहूँ, गन्ना, आलू एवं अन्य मौसमी सब्जियों की सिंचाई के लिए रेहट का उपयोग करते थे। जब हम पाँचवी-छठीं में पढ़ते थे, तो शैक्षणिक कैलेंडर भी जनवरी से शुरू होकर दिसंबर में खत्म हुआ करता था, इस कारण दिसंबर-जनवरी का महीना हम लोगों के लिए छुट्टी का महीना हुआ करता था। वैसे भी उस समय गाँव के बच्चे पढ़ते ही कितने थे। अतः इस कार्य के लिए हमारे पास पर्याप्त समय हुआ करता था। ऐसे में यदि संयोगवश रेहट में जुते बैलों को हाँकने का मौका मिल गया, तो हम खुशी-खुशी दस-बारह चक्कर बैलों के पीछे-पीछे घूम जाते थे।

आज हमारी जिंदगी अपने गाँव से दूर शहरों में फास्ट लेन में चलती है, जिसमें रूक कर सोचनें का मौका बहुत ही कम मिल पाता है। कार्यालय एवं परिवार के बीच संतुलन बनाते हुए तथा भौतिक उपयोग की वस्तुओं का संग्रह करते हुए, कब हमारे जीवन के 10-15 वर्ष निकल जाते हैं पता ही नहीं चलता है। एक भौतिक लक्ष्य की प्राप्ति होती नहीं है कि हम दूसरे लक्ष्य की प्राप्ति में लग जाते हैं। आज जब हम जिंदगी की तुलना उन दिनों से करते हैं, तो पाते हैं कि हमारा जीवन भी रेहट की तरह मद्धम-मद्धम सुकून के साथ चलता था, जिसमें वैसी ही मिठास होती थी, जैसे - रेहट से सिंचित खेतों में पैदा होने वाले गेहूँ, गन्ना एवं सब्जियों मे ंरहती थी। एक छोटी सी दुनिया जिसमें हमारा गाँव लगभग आत्मनिर्भर तो होता ही था और लोगों की आवश्यकताएँ भी सीमित होती थी। इन सब की पूर्ति के लिए ग्रामीण परिवेश में सब कुछ होता था। जिस तरह से रेहट से सिंचाई की प्रक्रिया चलती है,

उसे देखकर बड़ा सुकून मिलता था। इसकी रफ्तार ना तो ज्यादा, न ही कम होती थी। इस पूरी प्रक्रिया में एक अजीब मिठास का अनुभव होता था, जो और कहीं नहीं मिल सकता है। किसान का लड़का जिसकी उम्र जवानी की दहलीज पर होता और विरहा गाता हुआ बैलों के पीछे-पीछे घूमते रहता था और बैल भी बड़ी गंभीरता से उसकी विरह गाथा सुनते हुए अपने काम में तल्लीन रहते थे। इन सबके बीच में कुएँ में गिरने वाले पानी का झर-झर और रेहट की कल-कल की ध्वनि का मधुर संगीत होता था। इन सब को शायद शब्दों में बांध पाना संभव नहीं है। इसे तो बस अपने स्मृतियों में ही जिया जा सकता है।

निशांत कुमार
डी.ई.ओ.

प्रकृति, मानव और कोरोना

सोचा होगा मानव संग, धरती को स्वर्ग बनायेंगे,
क्या पता था, यें तो सारे कीड़े मकोड़े खा जायेंगे ।
सांप, छछुंदर, चमगादड़ ये कुत्ते बिल्ली भी खायेंगे,
तहस-नहस कर धरती को, खुद को सर्वश्रेष्ठ बतायेंगे ।।

विकृत हो मानव जब भी, दाव सा हो जाता है,
चारों ओर त्राहि-त्राहि, हाहाकार मच जाता है ।।

जन-जीवन को त्रस्त करने का, योजना खुद तैयार किया,
षडयंत्रकारी तरीकों से, विषाणु का आविष्कार किया ।
मानवता की छाती पर, ऐसा निर्मम वार किया,
कर ऐसा लगता है सारी, सीमाओं को पार किया ।।

जब-जब धरती पर पाप का घड़ा ऐसे भर जाता है,
चारों ओर त्राहि-त्राहि, हाहाकार मच जाता है ।।

विकास के नाम पर, जंगलों को काट दिया,
इतना गिरा कि स्वार्थ में, मां-बाप तक को बाँट दिया।
नदियाँ पाटी, नाले पाटे, पर्वतों को तोड़ दिया,
निज स्वार्थ पूर्ति हेतु, अपनों के ही दिल तोड़ दिया ।।

मानवता इस धरती पर जब भी इतना गिर जाती है,
चारों ओर त्राहि-त्राहि, हाहाकार मच जाता है ।।

वर्चस्व अपना बढ़ाने को मानव-मानव पार वार किया,
चढ़ा भूत, विकसित कहलाने का तो, परमाणु तैयार किया,
क्या अणु परमाणु से धरा को हरा बनायेगा,
या जला संग खुद भी खाक में मिल जयेगा।।

मानवता राहों से अपनी, भटक इतना जब जाती है,
चारों ओर त्राहि-त्राहि, हाहाकार मच जाता है ।।

चाहे कुछ भी सोचे मानव, गेहूँ की ही रोटी खाता है,
खाली रहता है बंगला, तन बराबर जगह में सो जाता है।
विकसित हुआ बहुत मानव, बस प्राण शरीर से लेने को,
पर है क्या कोई माँ का लाभ, जान चींटी में भी देने को ।

अहंकार में पागल मानव, जब-जब भी हो जाता है,
चारों ओर त्राहि-त्राहि, हाहाकार मच जाता है ।।

रावण ने भूल किया था, खुद को खुदा समझने का,
कोरोना संकेत है उसका, समय है यह समझने का।
राम-श्याम के पदचिन्हों पर, चलने का प्रत्यन करो,
लिख जाए इतिहास स्वर्ण अक्षर में, कुछ तो ऐसा यत्न करो।।

समय रखता हिसाब यहाँ सब, पुतला जलाया जाता है,
चारों ओर त्राहि-त्राहि, हाहाकार मच जाता है ।।

लिपटा शव-सा पी.पी.ई. किट में, खुद का कल का नहीं पता,
गोरखधंधा कर रहा धड़ाधड़, नेगेटिव पॉजिटिव बता-बता,
पैसे के पीछे पागल कुछ, कोरोना ठेकेदार यहाँ,
पता नहीं कितना ले जायेगा, संग मरने के बाद वहाँ।।

है ऐसा ये ऑडिट ऑब्जेक्शन जिसका सेटलमेंट नहीं हो पाता है,
चारों ओर त्राहि-त्राहि, हाहाकार मच जाता है ।।

झलकियाँ

महानिदेशक लेखापरीक्षा, हिन्दी दिवस समारोह के शुभारम्भ पर सम्बोधित करते हुए।

महानिदेशक लेखापरीक्षा, हिन्दी सप्ताह समापन समारोह के अवसर पर सम्बोधित करते हुए ।

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के अवसर पर कविता पाठ प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के अवसर पर कविता पाठ प्रतियोगिता

हिन्दी पखवाड़ा-2020 के अवसर पर कविता पाठ प्रतियोगिता

ऑनलाइन हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह कार्यक्रम-2020

झलकियाँ

ऑनलाइन हिन्दी पखवाड़ा
समापन समारोह कार्यक्रम-2020

नववर्ष के अवसर पर सम्बोधित करते हुए
श्री सुतीक्ष्ण दुबे, स.ले.प.अधि.

सतर्कता सप्ताह-2020 में आयोजित वाक् प्रतियोगिता
में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित श्री अभिषेक रंजन ''चुन्नू''
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नववर्ष के अवसर पर सम्बोधित करती हुई
श्रीमती रेनू भट्टाचार्य, पर्यवेक्षक

सतर्कता सप्ताह-2020 में आयोजित वाक् प्रतियोगिता
में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित श्री निशांत कुमार, डी.ई.ओ.

सतर्कता सप्ताह-2020 में आयोजित वाक् प्रतियोगिता
में तृतीय पुरस्कार से सम्मानित
श्री शुभाशिष मुखर्जी, सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
सत्यमेव जयते
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest